हृदय की किताब

मैं यहां आपको एक ऐसी किताब के बारे में बताना चाहता हूं जो कोई साधारण किताब नहीं है । यह आपके हृदय की किताब है । इस किताब के पन्ने हमारे जीवन से शुरू होते हैं । इस किताब में चीजों की व्याख्या नहीं की गयी है । इस किताब के हर एक पन्ने पर लिखा है कि आप सचमुच में कितने धन्य हैं । दुनिया की किताबों में लिखा जाता है कि आपके पास क्या-क्या नहीं है और इस किताब में लिखा जाता है कि आपके पास क्या-क्या है – आपके पास एक स्वांस है, यह जीवन है और सौभाग्य है कि हमें यह मनुष्य शरीर मिला ।

अपने जीवन में हृदय की किताब को भूल मत जाना, वहां बहुत कुछ लिखा है । मैंने तो सिर्फ एक ही पन्ने की थोड़ी सी पंक्तियां पढ़ी हैं, वह किताब बहुत मोटी है । उसमें तो हर एक चीज के बारे में लिखा हुआ है । इस आंनद के बारे में लिखा हुआ है । उस परमात्मा के बारे में लिखा हुआ है । उस परमानंद के बारे में लिखा हुआ है । इस जीवन को सफल करने के बारे में लिखा हुआ है । उस हृदय की किताब में तुम्हारे पास क्या नहीं है, इसके बारे में लिखा है । जो तुम्हारे पास है उसके बारे में लिखा हुआ है । एक दिन आएगा जब समझ में आ जाएगा कि सचमुच में तुम कितने धनी हो तब अपने आपको धन्य-धन्य पाओगे ।

सबसे बढ़िया खुशखबरी यह है कि जिस चीज की हमको तलाश है, वह हम से दूर नहीं है । वह हमारे बहुत ही करीब है । इतना करीब है जैसे नाक के नीचे कोई चीज हो, इन आंखों से नहीं दिखाई देगी । इसके लिए किसी चीज की जरूरत है, वह है – ज्ञान ।

मैं किसी के धर्म की आलोचना नहीं करता । हम तो सिर्फ यह कहते हैं कि करो जो तुमको करना है । लोग समझते हैं कि अंदर की शांति के लिये हमको बाहर के सारे सुखों को त्यागना पड़ेगा और बाहर की सारी जिम्मेदारियों को त्यागना पड़ेगा । यह हमारी गलतफहमी है । हमारे ऊपर बाहर जो कुछ भी जिम्मेदारियां हैं इनको निभाओ और अच्छी तरीके से निभाओ । ये बाहर की जिम्मेदारियां हैं । हमें यह भी समझना चाहिए कि अंदर के प्रति भी हमारी एक जिम्मेदारी है, इसको भी समझकर अपने जीवन में निभाओ । इसको भी अपने जीवन में निभाओ ।

अब प्रश्न यह है – अंदर की जिम्मेदारी क्या है ? वही पंक्तियां जो तुम्हारे हृदय के पन्नों में लिखी हुई हैं कि अपने जीवन को सफल बनाओ, अपने जीवन में शांति लाओ । अपने जीवन में उस बात को समझो जो बार-बार हृदय तुमसे कहता आ रहा है ।

मैं लोगों से बार-बार कहता हूं कि यह शांति हमारे जीवन में होनी चाहिए । खोजो इसको, जहां मिले, वहीं ठीक है । अगर खोज-खोज कर थक जाओ, न मिले तो हम हैं । हम दे सकते हैं । हमने लाखों लोगों को दिया है । हमने अपने जीवन में और कुछ नहीं किया है, यही करते आ रहे हैं । लोगों को शांति बांटते रहते है । यहां ही नहीं, जहां जाते हैं, दुनिया के कोने-कोने में हम गये हैं और लोगों को इस चीज से, अपने आप से लोगों का परिचय करवाया है । औरों से परिचय करवाने वाले तो बहुत मिल जाएंगे पर जो अपने आप से परिचय करा दे, वह हैं असली गुरू महाराज । हम खाली बात नहीं कह रहे हैं । खोजो, ढूंढो, जहां मिले, वही ठीक है और न मिले तो हम हैं ।

महाराजी